सौप्तिकपर्व कथासार

सौप्तिकपर्व में १८ अध्याय तथा ८०३ श्लोक हैं। युद्धक्षेत्र में दुर्योधन मार गिराया गया। उसकी दुर्दशा देखकर अश्वत्थामा अत्यन्त खिन्न हुआ। दुर्योधन की आज्ञा के अनुसार कृपाचार्य ने अश्वत्थामा को सेनापति के पद पर अभिषेक किया। तदनन्तर तीनों आचार्य अश्वत्थामा, कृपाचार्य और कृतवर्मा दक्षिण दिशा की ओर निकलकर सूर्यास्तमय के समय सेना के शिबिर के निकट पहुँचे। तदनन्तर शत्रुभय से वन के गहन प्रदेश में छिपकर तीनों आराम से बैठे। उनके शरीर अस्त्रों से अघात से घायल हो गये। इतने में विजयाभिलाषी पाण्डवों के भयंकर गर्जना सुनकर वे तीनों भयभीत हुए और वहाँ से रथों में पूर्वदिशा की ओर भाग चले। वे प्यास से पीडित हो गये। उनके घोडे भी थक गये। दुर्योधन के मारे जाने से दुःखी उन तीनों कुछ समय तक वहाँ खडे रहें।

धृतराष्ट्र ने संजय से पूछा कि मेरे पुत्र दुर्योधन के अधर्मपूर्वक मारे जाने पर कृतवर्मा, कृपाचार्य और अश्वत्थामा ने क्या किया? इसके उत्तर में संजय ने कहा कि वे तीनों वीर घोडों को पानी पिलाकर वहाँ से घोर वन में पहुँचे। स्नान और संध्यावन्दन के बाद रात की थकावट से कृपाचार्य और कृतवर्मा सो गये। अश्वत्थामा को नींद नहीं आयी। जिस वटवृक्ष के नीचे तीनों वीर थे उस वृक्ष पर सहस्रों कौएँ निवास करती थीं। वे रात में अपने अपने घोंसलों में सुखपूर्वक सोये थे। अश्वत्थामा ने देखा कि सहसा एक भयानक उल्लू उधर आया और दृष्टिपथ में आये सब कौओं को मार डाला। उल्लू का इस कपटपूर्ण क्रूर कर्म को देखकर अश्वत्थामा ने कपटपूर्वक शत्रुओं का संहार करने का निश्चय किया। अपने मामा कृपाचार्य तथा कृतवर्मा को जगाकर अश्वत्थामा ने रात को सोते समय पांचालों सहित पाण्डवों को मार डालने का अपना निर्णय सुना लिया। उसके निश्चय सुनकर दोनों लज्जित हुए और उत्तर देने में असमर्थ रहे। फिर अश्वत्थामा ने कहा कि पराक्रमसंपन्न राजा दुर्योधन पाण्डवों से मारा गया। कौरवपक्ष में सब का विनाश हो गया। केवल हम तीनों ही बचे हुये हैं। उसका वचन सुनकर कृपाचार्य ने कहा कि सभी मनुष्य दैव तथा पुरुषकार नामक दो कर्मों से बँधे हुये हैं। दोनों के संयोग से ही कार्यसिद्धि होती है। इन दोनों में दैव बलवान है। दैव के सहयोग से ही पुरुषप्रयत्न सफल हो जाता है। दुर्योधन लोभी तथा अदूरदर्शी था। हितवचनों को न सुनकर उसने पाण्डवों के साथ विरोध किया। पापी का अनुसरण करने से हमें भी अनर्थ प्राप्त हुआ। जब कोई मानव हित और अहित के निर्णय करने में असमर्थ होता तब उसे अपने सुहृदों की सलाह लेनी चाहिए। इसलिए हम राजा धृतराष्ट्र, गान्धारी तथा विदुर से कर्तव्य के बारे में पूछेंगे। कृपाचार्य की बात सुनकर अश्वत्थामा और अधिक शोक में डूब गया। उसने उन दोनों से कहा कि प्रत्येक पुरुष में अलग अलग बुद्धि होती है। अपनी अपनी बुद्धि को महत्वपूर्ण मानकर लोग संतुष्ट होते रहते हैं। और दूसरों की निंदा करते हैं। मनुष्य अपने विवेक के अनुसार जिस बुद्धि को अच्छा समझता है उसी के द्वारा कार्य सिद्धि की चेष्टा करता है। संकट में पडने से जो बुद्धि उत्पन्न हुई उसे मैं

आप दोनों को बताया। मैं परमपूजनीय ब्राह्मणकुल में पैदा हुआ हूँ। तथापि मंदभाग्य के कारण क्षत्रधर्म का अनुसरण करता हूँ। अन्यायपूर्वक मेरे पिता मारा गया। उसका अवश्य बदला लूँगा। रात में प्रशांत चित्त से सोये हुये पाञ्चालों को शिबिर में घुसकर वध कर डालूँगा। पाण्डवपुत्रों
को भी नाश कर डालूँगा।

कृपाचार्य बोला कि हे तात! तुम्हारे मन में बदला लेने की भावना जागृत हुई। कोई भी तुम्हें रोक नहीं सकता। आज रात विश्राम करो। कल सबेरे के संग्राम में हम दोनों तुम्हारे साथ चलेंगे। तुम अवश्य शत्रुओं का वध कर सकोगे। कृपाचार्य के हितकारक वचन सुनकर अश्वत्थामा क्रुद्ध हुआ और कहा कि शोकातुर, अमर्ष, कार्यचिंतन किसी की कामना इन चारों में किसी एक हो तो उसे नींद नहीं आती। ये चार मेरे ऊपर एक साथ पडी हैं। मुझे नींद कैसे आयेगी। मेरे पिताजी के वध का कारण धृष्टद्युम्न और उसके साथी पाञ्चाल को नहीं छोडूँगा। आज सोते समय शत्रु वध करके निश्चिन्त होकर विश्राम करूँगा। कृपाचार्य ने फिर समझाते हुए अश्वत्थामा से कहा कि हे तात! सोये हुये मनुष्यों का वध करना धर्मशास्त्र विरुद्ध है। ऐसा करनेवाला नरकसमुद्र में डूब जाता है। अब तक तुझ में कुछ भी पाप दिखायी नहीं पडता। कल सुबह शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना। अश्वत्थामा ने कहा कि हे मातुल! आपने जो कुछ कहा वह ठीक है। लेकिन पाण्डवों ने पहले ही इस धर्म मर्यादा को पार किया। अन्याय से मेरे पिताजी को मारा। शिखण्डी को आगे करके अर्जुन ने भीष्म का वध किया। रणभूमि में अनशन व्रत में स्थित भूरिश्रवा को सात्यकि ने मार डाला। भीमसेन ने गदायुद्ध करते समय दुर्योधन को अधर्मपूर्वक मार गिराया। इस प्रकार वे सब पापी और अधार्मिक हैं। उनके वध किये बिना मुझे नींद नहीं आती। ऐसा कहकर द्रोणपुत्र अश्वत्थामा घोडों को जोतकर रथ पर आरूढ होकर शत्रुओं की ओर निकला। कृपाचार्य और कृतवर्मा भी उसका मार्ग अनुसरण किया। वे तीनों पाण्डवों और पाञ्चालों के शिबिर के पास गये। वहाँ सब लोग सो रहे थे। शिबिर के द्वार पर पहुँचकर अश्वत्थामा खडा हो गया। भयंकर, अद्‌भुत, विशालकाय प्राणी द्वार की रक्षा में थी। उसे देखकर आश्चर्यचकित अश्वत्थामा उस पर दिव्य अस्त्रवर्ष किया। उसका प्रयत्न सब कुछ निष्फल हुआ। उसके सारे अस्त्र शस्त्र समाप्त हो गये। अस्त्रहीन अश्वत्थामा अद्‌भुत दृश्य देखकर कृपाचार्य के वचनों को याद करके दुःखी हुआ। उसने सोचा कि धर्ममार्ग से विचलित होकर भयंकर आपत्ति में पड गया हूँ। दैव की अनुकूलता के सिवा दूसरा कोई उपाय नहीं। ऐसा विचार करके भगवान् शङ्कर की स्तुति करके उसकी रक्षा में गया। तदनन्तर भगवान् शिव ने उसके शरीर में प्रवेश किया और उसे दिव्य खड्ग प्रदान किया। अश्वत्थामा शिबिर की ओर जाते देख अदृश्य राक्षस दौड गये। अश्वत्थामा जब शिबिर के भीतर जाने लगा तब कृपाचार्य और कृतवर्मा दरवाजे पर खडे हु। अश्वत्थामा ने उनसे कहा कि मैं तो शिबर के भीतर घुस जाऊँगा और वहाँ काल के समान व्यवहार करूँगा। मेरे हाथ से बचे कोई हो तो उसे

मारना। ऐसा कहकर उसने अंदर घुसा और धृष्टद्युम्न आदि को मार डाला। अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करके संतुष्ट अश्वत्थामा प्रातः काल में शिबिर से बाहर निकला। अश्वत्थामा ने सारा वृत्तान्त कृपाचार्य और कृतवर्मा दोनों को बताया। जीवित हो तो दुर्योधन को यह समाचार सुनाने के लिए तीनों वीर दुर्योधन के पास निकले। वहाँ जाकर उन्होंने राजा दुर्योधन को देखा, उसकी कुछ कुछ साँस चल रही थी। राजा की दुरवस्था देखकर तीनों अत्यंत दुःखित हुये और गद्‌गद् वाणी से दुर्योधन की प्रशंसा करके विलाप किये। जाँघे टूट जाने से बेहोश पडे राजा दुर्योधन से अश्वत्थामा ने कहा कि हे महाराज! आप जीवित हो तो कानों को सुख देनेवाली बात सुनें।

पाण्डव पक्ष में केवल सात और कौरव पक्ष में हम तीन ही व्यक्ति बच गये हैं। उधर पाण्डुपुत्र पाँच, श्रीकृष्ण और सात्यकि बचे हैं। इधर मैं, कृतवर्मा तथा कृपाचार्य। अत्यंत संतोषदायक बात सुनने से दुर्योधन को होश आ गया। "तुम सब लोगों का कल्याण हो। तुम्हें सुख प्राप्त हो। स्वर्ग में हम लोगों का पुनर्मिलन होगा" ऐसा कहकर दुर्योधन चुप हो गया। मरने से पहले उसने तीन वीरों को जाने की अनुमति दी। वे अपने अपने रथों पर नगर की ओर रवाना हुए। द्रोण पुत्र के द्वारा दुर्योधन की मरणवार्ता सुनकर संजय व्याकुल हो उठा और प्रातःकाल नगर की ओर दौड आया। उसने धृतराष्ट्र से कहा कि हे नरेश! आपके पुत्र के स्वर्ग लोक में चले जाने से मैं अत्यंत दुःखी हूँ। व्यासजी से दी गयी दिव्य दृष्टि भी अब नष्ट हो गयी। पुत्र की मृत्यु समाचार सुनकर धृतराष्ट्र गहरी चिन्ता में डूब गये।

धृष्टद्युम्न के सारथि ने रात को सोते समय जो संहार हुआ था उसे धर्मराज युधिष्ठिर को सुनाया। अमङ्गलमय वचन सुनकर युधिष्ठिर पुत्रशोक से संतप्त होकर पृथ्वी पर गिर पडा और विलाप किया। द्रौपदी को यहाँ ले आने के लिए उसने नकुल को भेजा। शोकाकुल युधिष्ठिर सुहृदों के साथ युद्धस्थल में गया। वहाँ के अमङ्गलमय दृश्य देखकर वह फूट फूटकर रोया। विलाप करती हुई द्रौपदी को युधिष्ठिर ने समझाया। द्रौपदी बोली - हे महाराज! मैं ने सुना है कि द्रोणपुत्र के मस्तक में एक मणि है जो उसके जन्म के साथ पैदा हुई। उस पापी को युद्ध में मारकर उस मणि को ले आना। उसे देख लूँगी। उस मणि को आपके सिर पर लगाकर ही मैं प्राण धारण कर सकूँगी। द्रौपदी का विलाप सुनकर भीमसेन इसे सहन न कर सके। उसने अश्वत्थामा के रथ के चिह्न देखके उसी ओर आगे बढा। श्रीकृष्ण ने अश्वत्थामा की चपलता और क्रूरता का वर्णन करके इस संदर्भ में सुदर्शनचक्र मांगने की बात कही। द्रोणपुत्र क्रोधी, दुरात्मा, चपल और क्रूर है। वह ब्रह्मास्त्र भी जानता है। अतः उससे भीमसेन की रक्षा करनी चाहिए। ऐसा कहकर भगवान् श्रीकृष्ण आयुधों से संपन्न रथ पर आरूढ हुये। तत्पश्चात् अर्जुन और युधिष्ठिर उस रथ पर बैठे। वे तीनों नरश्रेष्ठ बडे वेग से भीमसेन के पास जा पहुँचे। सब भागीरथी के तट पर पहुँचे। वहाँ व्यास अदि महर्षियों के साथ बैठे अश्वत्थामा को देखकर हाथ में धनुष लेकर

भीमसेन उसकी ओर दौडा। उन्हें देखकर अश्वत्थामा ने समस्त पाण्डवों के विनाश का चिन्तन करके दिव्य अस्त्र का प्रयोग किया। अश्वत्थामा के अस्त्र का निवारण करने के लिए अर्जुन ने ब्रह्मास्त्र को प्रयोग किया। उन दोनों से प्रयुक्त ब्रह्मास्त्रों का शान्त करने के लिए नारद और व्यास वहाँ उपस्थित हुए। दोनों वीरों को शान्त करने के लिए दोनों ऋषि प्रज्वलित अस्त्र के बीच में खडे हो गये। व्यास महर्षि की आज्ञा से अर्जुन ने अपने अस्त्र का उपसंहार किया। अपने दिव्यास्त्र को लौटा लेने को व्यास ने अश्वत्थामा से विनति की। महर्षि ने उससे कहा कि हे महाबाहो! तुम्हारे सिर में जो मणि है उसे इन्हें दे दो। पाण्डव इसके बदले प्राणदान देंगे। अश्वत्थामा ने कहा कि अस्त्र को लौटा लेने में असमर्थ हूँ। यह अस्त्र मैं पाण्डवों के गर्भों पर छोड रहा हूँ। व्यासमहर्षि ने इस अस्त्र को पाण्डवों के गर्भों पर छोडने की अनुमति दी। द्रोण पुत्र ने वैसा ही किया। यह जानकर भगवान् श्रीकृष्ण अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने द्रोणपुत्र से कहा कि पूर्वकाल में अर्जुन की पुत्रवधू तथा विराट की कन्या जब उपप्लव्य नगर में रहती थी तब एक ब्राह्मण ने उसे देखकर कहा कि

बेटी! जब कौरववंश परिक्षीण हो जायेगा तब तुम्हें एक पुत्र प्राप्त होगा। इसलिए उस गर्भस्थ शिशु का नाम परिक्षित् पुनः पाण्डुवंश का प्रवर्तक होगा। श्रीकृष्ण की बात सुनकर अश्वत्थामा क्रुद्ध हुआ और कहा कि वह अस्त्र उत्तरा के गर्भ पर ही गिरेगा। श्रीकृष्ण ने कहा कि उत्तरा के गर्भ से मरा हुआ ही पैदा होगा। फिर उसे लंबी आयु प्राप्त हो जायेगी। पाण्डवों को मणि देकर वन चला गया। युधिष्ठिर अनशन व्रत में बैठी द्रौपदी को मणि दिखाने के लिए पाण्डव, श्रीकृष्ण, नारद, व्यास को आगे करके उसके पास चले। द्रौपदी की इच्छा के अनुसार युधिष्ठिर ने उसे मस्तक पर पहन लिया। युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण से पूछा कि इतने महारथियों को वध करने की शक्ति अश्वत्थामा को कैसे आई? इसके उत्तर में श्रीकृष्ण ने महादेव की महिमा सुनाकर कहा कि अश्वत्थामा महादेव की कृपा से संपन्न हुआ।

।। सौप्तिकपर्व कथासार समाप्त ।।